ये विज्ञान से भी जुड़े हुए हैं। संगोष्ठी खूब सफलता के साथ चले।'

'चिन्तन' स्मारिका के बारे में आचार्यवर ने कहा--'यह जानकारी देने वाली स्मारिका बने।' आगमों के अंग्रेजी अनुवाद के प्रोजेक्ट को आचार्यवर ने उपयोगी बताते हुए कहा--'यह कार्य आगे से आगे चलता रहे।' आचार्यप्रवर ने अपने मूल प्रवचन में मंगल की विस्तृत चर्चा करते हुए उस धर्म को सर्वोत्कृष्ट मंगल बताया, जिसके अहिंसा, संयम व तप अंग हैं।' कार्यक्रम का संचालन श्री सोहनलाल तातेड़ ने किया।

शक्ति की होती है पूजा

२३ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने कहा--'भीतर जाने के लिए साधना के अनेक मार्ग हैं। व्यक्ति चयन करे कि उसके लिए कौन-सा मार्ग श्रेयस्कर है। साधना में संलग्न साधक के लिए वात, पित्त, कफ का संतुलन आवश्यक होता है। खाद्य संयम रखने वाला व अस्वाद वृत्ति पर विजय पाने वाला साधक साधना में प्रगति कर सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में शक्ति की पूजा होती है। शरीर से स्थूल या कृश होना इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है व्यक्ति का शक्तिशाली होना। तनबल, वचनबल, मनोबल, धनबल, जनबल आदि अनेक प्रकार के बल होते हैं। जिसमें तेज है, वह बलवान है। बलवान को प्रतिष्ठा मिलती है। शक्तिशाली व्यक्ति दूसरों का भला भी कर सकता है और बुरा भी। शक्ति तो एक तीखी धार है। यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग कहां पर करे? सम्यक् कार्य में आदमी पुरुषार्थ करे, तप व संयम में पराक्रम करे। सज्जन व्यक्ति दूसरों की समस्याओं का समाधान करता है, वह दूसरों के लिए समस्या नहीं बनता। वह अपने ज्ञान के आलोक से दूसरों के अज्ञान तिमिर को नष्ट कर देता है। सज्जन व्यक्ति पैसे का सही उपयोग करता है। दुर्जन अपनी शारीरिक शक्ति का उपयोग दूसरों को कष्ट देने में, उनका अहित करने में करता है। वह पैसे का अहंकार करता है। अपेक्षा है सभी अपनी शक्ति का संचय कर उसे सही दिशा में नियोजित करने का प्रयत्न करें।'

१६ अक्टूबर को प्रारंभ हुए आध्यात्मिक अनुष्ठान का आज समापन हुआ। प्रतिदिन पूज्यप्रवर द्वारा निर्धारित मंत्रों का सस्वर पाठ हुआ। पंडाल में उपस्थित लोग इस अनुष्ठान में संभागी बने।

२२-२४ अक्टूबर तक चली 'जैनदर्शन, विज्ञान और साहित्य' विषयक संगोष्ठी के सभी सत्रों में आगम मनीषी प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी की सतत व सक्रिय उपस्थिति रही। संभागियों को मुनिश्री का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। टेक्निकल सत्रों में देश के लगभग पचास विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर पत्र वाचन किया। प्लेनरी सत्रों में प्रश्नोत्तरों के माध्यम से विस्तृत चर्चा चली। दो कार्यशालाओं का भी आयोजन हुआ। पहली कार्यशाला में जैनधर्म में शोध की संभावना व दूसरी में व्यापक प्रचार-प्रसार के संदर्भ में गहन चिंतन-मंथन हुआ।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्रीमती इलायचीदेवी बोरड़ (धर्मपत्नी-श्री सोहनलालजी बोरड़) का प्रभावक संथारे में स्वर्गवास हो गया। १२ जुलाई को दस दिन की संलेखना में आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वी मधुस्मिताजी से उन्होंने तिविहार संथारा स्वीकार किया। २८ अगस्त को साध्वीश्री से चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। २९ अगस्त को लगभग छब्बीस घंटे के चौविहार संथारे में उनका स्वर्गवास हो गया। सरदारशहर के श्री सुमेरमलजी बुच्चा की सुपुत्री श्रीमती इलायचीदेवी पिछले

अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़ ने आगामी अधिवेशन पर प्रदान किए जाने वाले वर्ष २०१२ के पुरस्कारों के चयन की घोषणा की। 'युवा गौरव' के लिए श्री कमल दूगड़ (कोलकाता), 'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' के लिए श्री पन्नालाल पुगलिया (जयपुर) तथा श्री इन्द्रचन्द दुधेड़िया (बेंगलुरु), 'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार' के लिए डॉ. प्रकाश छाजेड़ (बेंगलुरु), 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' के लिए श्री प्रदीप बोथरा (रायसिंहनगर), श्री मुकेश कोठारी (अहमदाबाद), श्री रमेश कोठारी (बेंगलुरु), श्री निर्मल गोखरू (भीलवाड़ा) के नामों की घोषणा हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

जैन दर्शन, विज्ञान एवं साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

२२ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यवर की पावन सन्निधि में 'जैन दर्शन, विज्ञान एवं साहित्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी संयोजक डा. नारायणलाल कच्छारा ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। आगममनीषी प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी, जैविभा इंस्टीट्यूट मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। स्मारिका 'चिन्तन' का लोकार्पण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भारतीय विद्याओं में एक विद्या है जैन विद्या। जैन आगमों एवं अन्य ग्रंथों के माध्यम से यह अवगति मिल सकेगी कि जैन विद्या कितनी समृद्ध विद्या है। एक भगवतीसूत्र को ही कोई सांगोपांग एवं आद्योपान्त पढ़ लें तो उसका काफी रसास्वादन कर सकता है। कौन-सा ऐसा प्रचलित विषय होगा जो भगवतीसूत्र में वर्णित होने से अस्पृष्ट रह गया हो। भगवती पर भाष्य आलेखन में परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ ने श्लाघ्य परिश्रम किया था। अभी इसका केवल हिन्दी संस्करण प्रकाश में आ रहा है। यह कार्य प्रायः संपन्न हो गया है।'

जैनदर्शन, विज्ञान एवं साहित्य पर आयोजित संगोष्ठी को महत्त्वपूर्ण बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'मेरे मन में यह भावना आई है कि चतुर्मास में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी जैनविद्या पर आयोजित हो। उसमें विद्वानों की संगीति हो जाए। यह जैनविद्या की एक सेवा होगी।'

जैन विश्वभारती और जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट मान्य विश्वविद्यालय के संदर्भ में अनुशास्ता ने कहा--'जैन विश्वभारती को मैं महत्त्वपूर्ण संस्था मानता हूं। गुरुदेव तुलसी ने इसे 'कामधेनु' कहा। यह अच्छा शब्द है। मैंने इसके लिए 'जयकुंजर' शब्द प्रयुक्त किया। जय विजेता हस्ती की भांति यह समृद्ध है। इसी से संबद्ध है जैन विश्वभारती संस्थान-मान्य विश्वविद्यालय। यहां से जैन विद्या की सेवा की जा रही है। रेगुलर व पत्राचार के माध्यम से कितनों ने यहां अध्ययन किया है व कर रहे हैं। इंस्टीट्यूट के बारे में मेरी सोच है कि इसके समस्त कार्यों में जैन विद्या इसके केन्द्र में रहनी चाहिए। इस संस्थान के साथ 'जैन' शब्द लगा हुआ है, इसलिए जैन विद्या के अध्ययन, अध्यापन एवं संप्रसार को यहां प्रमुखता मिले, यह वांछनीय है।'

शोध के स्वरूप की चर्चा करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'शोध कार्य में गहराई होनी चाहिए। इसमें डाक्टरेट की उपाधि मिल जाए, ठीक है, पर मूल लक्ष्य तलस्पर्शी अध्ययन होना चाहिए। शोध ऐसा हो, जिसमें श्रम व दिमाग लगे, प्रज्ञा लगे, फिर चाहे वह सौ पृष्ठों का ही क्यों न हो। वह अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। दस-पन्द्रह ग्रंथों से उठाकर कुछ दिया जाता है तो वह मात्र संकलन हो जाएगा। शोधकार्य का मुख्य लक्ष्य उपाधि पाना न रहे। अपनी प्रज्ञा से शोधकार्य को प्रस्तुत करने का लक्ष्य रहे, यह महत्त्वपूर्ण है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अन्य व्यस्तताओं के चलते इस संगोष्ठी में मेरा आना तो कम संभव हो सकेगा। बहुश्रुत मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता के साथ वहां विद्वानों के बीच रहने का प्रयास करें। मुनिश्री का अपना वैदुष्य और अपनी प्रतिभा है, उसका उपयोग हो सकेगा।